इकाई 31 1857 के विद्रोह की घटनाएं और बाद के हालात

इकाई की रूपरेखा

31.0 उद्देश्य

1857 के विद्रोह के कारण और स्वरूप पर विचार करने के बाद, आइए हम इस विद्रोह के दौरान घटी घटनाओं और बाद के हालात पर गौर करें। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- मई और जून, 57 और उसके बाद के महीनों में विद्रोह की प्रगति पर प्रकाश डाल सकेंगे,
- सितम्बर 1857 में दिल्ली के आत्मसमर्पण के बावजूद विद्रोह के प्रगाढ़ता को रेखांकित कर सकेंगे,
- विद्रोह के दौरान बनी संस्थाओं का उल्लेख कर सकेंगे,
- इन्हें दबाने के प्रयत्नों का वर्णन कर सकेंगे,
- 57 के बाद के वर्षों में कृषीय संबंधों के पुनर्गठन पर विचार कर सकेंगे, और
- राजाओं और मुसलमानों के प्रति औपनिवेशिक नीति का हाल बता सकेंगे।

31.1 प्रस्तावना

मई और जून 1857 के बीच उत्तर भारत के प्रमुख ब्रिटिश केंद्रों आगरा, लखनऊ, इलाहाबाद और बनारस की घेराबंदी कर दी गई थी। इस समय तक यह विद्रोह अवध, रोहिलखंड, बुंदेलखंड, बिहार और मध्य भारत के कई क्षेत्रों में फैल गया था।

इस इकाई में विद्रोह की प्रक्रिया, उस दौरान घटने वाली घटनाओं, औपनिवेशिक शक्ति के प्रतीकों पर होने वाले प्रहार और नए विद्रोही संस्थाओं के उदय का जिक्र किया गया है।

हालांकि 1858 के आरंभ में ही यह आभास होने लगा था कि अंग्रेजों की जीत निश्चित है, पर इस विद्रोह को पूर्ण रूप से इस वर्ष के अंत तक ही दबाया जा सका। इसके लिए अंग्रेजों को नयी युद्ध नीति अपनानी पड़ी, इंग्लैंड से नयी कुमक मंगानी पड़ी। इसके अतिरिक्त इस इकाई को पढ़ने से आने वाले दशक में विभिन्न सामाजिक वर्गों, भारतीय राज्य और मुसलमानों के प्रति अंग्रेजों की नीति को समझने का आधार भी प्राप्त हो सकेगा।

31.2 विद्रोह की प्रमुख घटनाएं

1857 में भारत की नियमित सेना में लगभग 45,000 यूरोपीय और 232,000 भारतीय थे।

इस समय अधिकांश यूरोपीय इकाइयां कब्जे में लिए गए नए क्षेत्र फैलाव में केंद्रित थी। अतः इस समय कलकत्ता और दिल्ली के बीच मात्र पाँच यूरोपीय रैजिमेंट ही उपस्थित थे।

मेरठ की विद्रोही सेना 11 मई को दिल्ली पहुंच गई। और पेंशन पर जी रहे मुगल बादशाह बहादुर शाह-II को विद्रोह का नेतृत्व संभालने को कहा तथा उन्हें शहंशाह-हिंदुस्तान के ओहदे से अलंकृत किया।

5. 1857 (विद्रोही सेना दिल्ली में एकत्रित होते हुये)

जून के प्रथम सप्ताह तक विद्रोह की आग अलीगढ़, मैनपुरी, बुलंदशहर, इटावा, मथुरा, लखनऊ, बरेली, कानपुर, झांसी, निमच, मुरादाबाद, सहारनपुर आदि तक फैल गई थी।

मध्य जून और सितम्बर, 1857 के बीच यह आग ग्वालियर, भोहो और स्यालकोट तथा बिहार में दानापुर, हजारीबाग, रांची और भागलपुर तथा मध्य भारत में नागोडे और जबलपुर में फैल गई थी।

सितम्बर-अक्तूबर, तक यह स्पष्ट हो चुका था कि विद्रोह की आग नर्मदा को नहीं पार करेगी। नर्मदा के उत्तर में विद्रोह दिल्ली और पटना के बीच गंगा नदी से ग्रैंड ट्रंक रोड तक फैला हुआ था।

31.3 सैन्य विद्रोह

विद्रोह की घटनाओं के क्रम को देखने से ही उसके फैलने की प्रवृत्ति और तरीके का पता लग जाता है।

विद्रोह की आग मेरठ और दिल्ली से गंगा तट पर नीचे की ओर फैली, जैसे-जैसे विद्रोह की खबर फैली, वैसे-वैसे उतने ही अंतराल से, विद्रोह भी फैला।

एक अफवाह यह भी थी कि 30 मई 1857 का दिन उत्तर भारत से अंग्रेजों को पूर्ण रूप से निष्कासित करने के लिए मुकर्रर किया गया था।

जिस प्रकार दिल्ली पर कब्जा होने की खबर से सेना और जनता ने विद्रोह कर दिया, उसी प्रकार मई के अंत में लखनऊ, का पतन होने पर अवध के आसपास के इलाके में बिद्रोह भड़क उठा।

इस बात के कुछ प्रमाण मिलते हैं कि विद्रोह कर रहे रेजिमेंटों के बीच थोड़ा-बहुत तालमेल और संचार कायम था और उनके कार्यकलापों में एक प्रकार की समानता थी। पर जिन्होंने यह तालमेल बैठाने की कोशिश की उन्होंने अपने नाम को गुप्त रखा।

सेना में एक ही क्षेत्र अवध से ज्यादातर सिपाही भर्ती किए गए थे, अतः विद्रोह और ब्रिटिश कार्यवाई की खबर तेजी से फैली। धर्म से संबंद्ध अफवाहों ने विद्रोह की आग को फैलाने में घी का काम किया।

इस विद्रोह में ब्रिटिश अधिकारियों के घर नष्ट किए गए और सरकारी खजानों और जेलों को तोड़ा गया।

अवध के सिपाहियों ने घोषणा की कि तेलिंग राज (सिपाही राज शब्दावली देखें) का आगमन हो गया है।

31.4 जन विद्रोह

1856-57 के जाड़े में एक गांव से दूसरे गांव चपातियां वितरित होती रहीं, विभिन्न व्यक्तियों के लिए इसका अलग-अलग अर्थ था। वस्तुत: यह विद्रोह का बिगुल था और जहां-जहां ये चपातियां पहुंचीं वहां-वहां विद्रोह की आग फैली।

चर्बी लगे कारतूस, आटे में हड्डी चूर्ण की मिलावट और जबरदस्ती ईसाई धर्म में परिवर्तित करने की अफवाहों ने अंग्रेजों के खिलाफ जनता के असंतोष को विद्रोह में परिवर्तित कर दिया।

कई स्थानों पर लोग इकट्ठे होते थे, बात-विचार करते थे, योजनाएं बनाते थे और सरकारी तथा बनिया समुदाय की संपत्ति पर आक्रमण कर देते थे। पड़ोसी गांव के एक जाति से जुड़े लोग इकट्ठा होते थे और एक साथ मिलकर आक्रमण करते थे। अमूमन 30 से 60 गांवों के लोग एक साथ मिलकर सदा मुख्यालय पर आक्रमण करते थे।

सभी जगह आक्रमण का तरीका एक जैसा था। कर वसूलने वाले अधिकारियों, न्यायालय में काम करने वाले पदाधिकारियों, पुलिस और बनिया पर आक्रमण किया जाता था। कोष लूटे जाते थे, कैदियों को रिहा कराया जाता था और मकानों में आग लगाई जाती थी।

निश्चित रूप से विद्रोही राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित होकर काम करते थे और आर्थिक स्रोतों को नष्ट करने में बिल्कुल नहीं हिचकते थे। मसलन, कोटा की कोयले की खान नष्ट की गई, नहरों को तोड़ा गया ताकि नाव द्वारा ब्रिटिश सेना बुलंदशहर न पहुंच सके। इसी प्रकार रेलवे पर आक्रमण किया गया। संयुक्त प्रांत में उन कारखानों पर भी आक्रमण किया गया जो गरीब मजदूरों के जीने के साधन थे।

विद्रोह को दबाने के क्रम में अंग्रेजों को विद्रोहियों के बीच की एकता और बंधन को देखकर हैरानी हुई। बड़ा से बड़ा प्रलोभन भी उन्हें न डिगा सका, इस विद्रोह में अंग्रेज, हिंदू और मुसलमानों को भी एक दूसरे के खिलाफ लड़ा नहीं सके।

बोध प्रश्न 1

1) 1857 के विद्रोह के भौगोलिक विस्तार पर संक्षेप में टिप्पणी करें। उत्तर पाँच पंक्तियों में दें।

....

....

....

....

....

2) भारत के मानचित्र पर मुख्य विद्रोह केंद्रों को चिन्हित करें।

....

....

....

....

....

....

....

....

31.5 बगावती संस्थाएं

1857 के विद्रोह में केवल अंग्रेजों को उखाड़ फेंका ही नहीं गया, बल्कि नये प्रशासन के लिए

विद्रोहियों द्वारा संगठनात्मक प्रयास भी किए गए—
- दिल्ली पर कब्ज़ा करने के तुरंत बाद पड़ोसी राज्यों (आधुनिक राजस्थान) से सहयोग मांगा गया,
- दिल्ली में प्रशासकों की एक निकाय स्थापित की गई। इसके 10 में से 6 सदस्य सेना से लिए गये थे और चार अन्य दूसरे विभागों से। निर्णय बहुमत से किया जाता था।

अन्य केंद्रों में भी इस प्रकार के संगठनात्मक प्रयास किये गए। अवध में विरजिस कादर (अल्प वयस्क) को सर्वसम्मति से बादशाह घोषित किया गया। यह घोषणा 30 जून 1857 को चिनहट के युद्ध में अंग्रेजों को हार के तुरंत बाद की गई। विद्रोहियों ने निम्नलिखित शर्तों का पालन करने का आदेश दिया—
- दिल्ली के आदेश का पालन किया जाएगा।
- वजीर का चुनाव सेना करेगी।
- सेना की सम्मति के बाद ही सेना के अधिकारियों की नियुक्ति की जाएगी।
- अवध को विद्रोही कार्यकारी परिषद में दो निर्णय लेने वाली इकाइयां थीं।
- संगठन और भुगतान को देखने के लिए प्रशासकों और दरबार के अधिकारियों से मिल कर बनी इकाई।
- विद्रोही सिपाहियों और कुछ दरबारी अधिकारियों से मिलकर बनी 'मिलीट्री सेल'।

यह ध्यान देने योग्य तथ्य है कि जुलाई 57 के आसपास जब विद्रोह की शुरुआत ही हुई थी, किसी भी निर्णायक संस्था में ताल्लुकदार शामिल नहीं थे। वस्तुत: ताल्लुकदारों और जमींदारों को विद्रोह में शामिल होने और अंग्रेजों के खिलाफ बगावत करने के लिए आदेश जारी किए गए थे और उनके भूमि और भू-राजस्व का अधिकार सही सलामत रहने देने का आश्वासन दिया गया था।

कभी-कभी विद्रोहियों के बीच मतभेद भी हुआ करते थे, मसलन अवध में बिरजिस कादर और मौलवी अमादुल्लाह के अनुयायियों का मतभेद। पर यह गौर करने की बात है कि इस प्रकार के मतभेदों को आपसी सुलह से निपटा लिया गया।

सिपाहियों और कमांडरों की कार्यवाइयों के लिए दिशा-निर्देश जारी किए गए। विद्रोही सेना के नियमित भुगतान का भरपूर प्रयास किया गया। इसके लिए बाहनों को सिक्कों में ढाला गया था। ताल्लुकदारों को भू-राजस्व वसूलकर भुगतान करने का आदेश दिया गया।

31.6 दमन

6. आत्म समर्पण करते हुये विद्रोही सिपाही

जिन-जिन स्थानों पर विद्रोह संगठित रूप में नहीं उभरा उन्हें आसानी से दबा दिया गया। पेशावर, सिंगापुर, कोल्हापुर, चिटा गांव और मद्रास जैसे दूर-दराज के इलाकों में विद्रोह एक-एक करके हुए और मुख्य धारा से न जुड़कर अलग-थलग पड़े रहे। इससे इन विद्रोहों को दबाने में आसानी हुई।

जुलाई के आरंभ तक विद्रोह अपनी शक्ल अख्तियार कर चुका था और अंग्रेज इसे दबाने की ओर प्रवृत्त होने लगे थे। भारत की अंग्रेजी सरकार के आग्रह पर इस विद्रोह को दबाने के लिए 39,000 ट्रूप लंदन से रवाना किया गया। नवंबर 57 तक यह सेना हुगली तट पर पहुंच गई।

अगस्त के मध्य तक विद्रोहियों को आरा गया और हजारीबाग (सभी बिहार में) से निकाल फेंका गया। भयंकर मारकाट के बाद 21 सितम्बर को दिल्ली भी अंग्रेजों के कब्जे में आ गया। इसके बाद विद्रोहियों ने लखनऊ को अपना केंद्र बना लिया।

अवध प्रांत में लखनऊ युद्ध का प्रमुख केंद्र था। सभी जिलों से यहां गोला-बारूद भेजा जाता था और फैजाबाद में भारी बंदूकों की मरम्मत करने का कारखाना खोला गया। कई ताल्लुकदार व्यक्तिगत तौर पर लड़े। एक आंकड़े के अनुसार अवध में डेढ़ लाख लोग मरे, इनमें गैर सैनिकों (नागरिकों) की संख्या एक लाख थी। मार्च 1858 में लखनऊ के हार के बाद विद्रोही देहातों में फैल गए और लखनऊ के दक्षिण और दक्षिण-पूर्व तथा पश्चिम और उत्तर-पश्चिम से विद्रोह को जीवित रखने का प्रयास करने लगे। सितम्बर-अक्तूबर 1858 तक विद्रोहियों को यह विश्वास था कि एक संगठित और योजनाबद्ध आक्रमण से अभी भी अंग्रेजों को अवध से भगाया जा सकता है और वे इस दिशा में प्रयत्न करने लगे।

इस विद्रोह के प्रमुख नेताओं में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं :

- झांसी की रानी, जो जून 1858 में लड़ती हुई वीरगति को प्राप्त हुई।
- अंतिम पेशवा, बाजीराव-II के दत्तक पुत्र नाना साहब पेशवा ने कानपुर में विद्रोह का नेतृत्व किया और 1859 के आरंभ में नेपाल में जाकर छिप गये।
- आरा के कुंअरसिंह, जिन्होंने आजमगढ़ और गाजीपुर को अपना रण क्षेत्र बनाया, मई 1858 में अंग्रेजों से लड़ते हुए मारे गए।
- बेगम हजरत महल, जो बाद में नेपाल भाग गयीं।
- अवध की सीमाओं और रोहिलखंड में विद्रोह का नेतृत्व मौलवी अहमदुल्लाह ने किया और अंतिम दम तक उसने लड़ाई की। उसकी मृत्यु जून 1858 में हुई।
- तांत्याटोपे अपने मूल स्थान (जमुना तट पर बसे काल्पी) में हारकर जून 1858 में ग्वालियर पहुंचे और अक्तूबर में नर्मदा पार किया। 1859 में उन्हें बंदी बनाकर मृत्युदंड दे दिया गया।

सीमित हथियार और गोला बारूद तथा कमजोर संचार व्यवस्था के बावजूद विद्रोही एक साल से ज्यादा समय तक लड़ते रहे। कई सिपाही ब्रिटिश स्रोतों को देखते हुए हैरान थे और वे यह संभावना भी देख रहे थे कि कहीं उन्हें दबाने के लिए अंग्रेज फ्रांसिसियों की सहायता न लें। दूसरी तरफ अंग्रेजों ने अवध को घेर लिया, दिल्ली और जमुना के इलाके की गर्दन दबोच ली और फिर अवध की ओर अपना ध्यान केंद्रित किया।

1957 विद्रोह के कुछ प्रमुख नेता

7. तात्या टोपे 8. झांसी की रानी लक्ष्मीबाई 9. नाना साहिब

बोध प्रश्न 2

1) विद्रोही संस्थाओं के दो उदाहरण का उल्लेख करते हुए संक्षेप में उनका वर्णन करें।

....

....

....

....

....

2) लखनऊ की प्रतिरक्षा विद्रोह की गहराई को किस हद तक प्रतिबिंबित करता है? 50 शब्दों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

....

31.7 बाद के हालात

नयी सैन्य रणनीति और ताल्लुकदारों के आत्मसमर्पण के कारण 1857 के विद्रोह को दबाने में मदद मिली। अंग्रेजों ने पुन: भारत पर अपना नियंत्रण जमाया और भारतीय राजाओं ने उन्हें इस आधार पर सहयोग दिया कि वे उत्तराधिकार के प्रश्न पर कोई हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

31.7.1 भूमिपति

उत्तरी पश्चिमी प्रांतों में अंग्रेजों ने बहुतायत में भूमि जब्त की और उन्हें पुनर्वितरित किया। कुछ अधूरे आंकड़ों से पता चलता है कि 17 लाख मूल्य वाली भूमि को जब्त कर लिया गया और 9 लाख मूल्य वाली भूमि को पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया गया। पुरस्कार देने में बड़े जोतदारों को ज्यादा चुना गया।

लखनऊ के पतन के बाद एक अधिघोषणा द्वारा छह खास इलाकों को छोड़कर पूरे अवध में संपत्ति का अधिकार जब्त कर लिया गया। ताल्लुकदारों को उनकी वफादारी और आत्मसमर्पण करने के एवज में इलाके प्रदान किए गए। 23,543 गांवों में से 22,658 गांवों का पुनर्वितरण किया गया।

अवध में संपत्ति गत अधिकार "इच्छा आधारित काश्तकार" सिद्धांत पर आधारित किया गया। 1859-60 में अवध के कई जिलों में इस ताल्लुकदारी बंदोबस्त का जम कर विरोध हुआ। ग्रामीण असंतोष को देखते हुए सरकार ने ताल्लुकदारों की मांग पर अंकुश लगाया और कम उपज वाली जमीन की अधिकतम दर निर्धारित कर दी गयी (1866)। यह भी तय किया गया कि 12 साल तक इच्छा पर आधारित काश्तकार या अल्प संपत्तिगत अधिकार की रक्षा की जाएगी।

31.7.2 राजे-महाराजे

आपको याद होगा कि राज्यों को हस्तगत करने की ब्रिटिश नीति के कारण बहुत से भारतीय राजाओं ने विद्रोह का नेतृत्व किया, इनमें झांसी की रानी, नाना साहेब और बेगम हजरत महल उल्लेखनीय हैं।

विद्रोह के दौरान कैनिंग ने यह गौर किया कि ग्वालियर, हैदराबाद, पटियाला, रामपुर और रीवा जैसे राजाओं का साथ न मिला होता तो 1857 की आंधी में ब्रिटिश सत्ता का विनाश अवश्यंभावी था।

अत: 1858 की उद्घोषणा में रानी ने यह घोषणा की कि अपना राज्य फैलाने की अंग्रेजों की कोई मंशा नहीं है। राजवाड़ों को प्रसन्न करने के लिए कैनिंग ने "समाप्ति का सिद्धांत" (डाक्ट्रीन ऑफ लैप्स) समाप्त कर दिया और सभी शासकों को उत्तराधिकारी घोषित करने/गोद लेने का अधिकार दे दिया।

ग्वालियर, रामपुर, पटियाला और जिंद जैसे वफादार राजवाड़ों को भू-क्षेत्र और पैसे के रूप में इनाम दिया गया।

1861 में एक विशेष नाइटहुड सम्मान "भारत का सितारा" की घोषणा हुई। यह सम्मान बड़ौदा, भोपाल, ग्वालियर, पटियाला और रामपुर के राजाओं को प्राप्त हुआ।

हालांकि राजाओं को इस चिंता से मुक्त कर दिया गया कि अंग्रेज उनके राज्य पर दखल जमा लेंगे, पर यह बात उन्हें साफ तौर पर बता दी गई कि "कुप्रशासन" और "अल्पावस्था" की दशा में ब्रिटिश सरकार अस्थाई तौर पर राजवाड़ों की बागडोर अपने हाथ में ले लेगी।

31.7.3 सेना

1861 में भारत के मामलों का सेक्रेट्री ऑफ स्टेट चार्ल्स वुड ने कैनिंग को पत्र लिखा, जिसमें विद्रोह के बाद सेना के प्रति ब्रिटिश नीति का खुलासा मिलता है। "अगर किसी एक रेजिमेंट ने विद्रोह किया तो मैं चाहूंगा कि दूसरी रेजिमेंट उससे इतनी अलग-थलग हो कि उसे विद्रोही रेजिमेंट पर गोली चलाने में जरा भी हिचक न हो"।

अवध, बिहार और मध्य भारत के सैनिकों को सेना के लिए अयोग्य जाति के रूप में घोषित किया गया और उनकी भर्ती में तेजी से कटौती की गयी।

सिख, गोरखा और पठान युद्ध के लिए योग्य जाति के रूप में प्रतिष्ठित किए गये और सेना में उनकी खूब भर्ती की गयी। इन लोगों ने विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों की सहायता की थी।

संक्षेप में, समुदाय, जाति, जनजाति और प्रांतीय वफादारी को बढ़ावा दिया गया ताकि वफादारी में कोई खोट न आने पाये।

31.8 ब्रिटिश नीति

1857 के विद्रोह के बाद 1858 में एक भारत सरकार अधिनियम द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को समाप्त कर दिया गया। अब इंग्लैंड की रानी के नाम पर सीधा शासन होना था। 1858 की राजकीय उद्घोषणा इस प्रकार है–

- 2 जनवरी, 1859 तक जिन लोगों ने आत्मसमर्पण कर दिया है, उन्हें माफ कर दिया जाएगा, केवल उन लोगों को छोड़कर जिस पर किसी अंग्रेज की हत्या में सीधा शामिल होने का आरोप हो।
- सरकारी नौकरी सबके लिए उपलब्ध होगी।
- भारत की प्राचीन परंपराओं और रीति-रिवाजों को सम्मान दिया जाएगा।

अंग्रेजों के अनुसार बहादुरशाह-II को विद्रोह की बागडोर संभालने का आहृवान एक बार फिर से दिल्ली में मुगल सत्ता की स्थापना का प्रयत्न था। अधिकारियों के बीच इसी प्रकार की धारणा फैली हुई थी। जो विद्रोह के बाद के दिनों में उस समुदाय के प्रति उनके व्यवहार में भी प्रतिबिंबित हुई।

मुसलमान विरोधी यह रवैया इतना मजबूत था कि सैयद अहमद खां ने 'कौन थे वफादार मुसलमान?' शीर्षक से एक पर्चा लिखना जरूरी समझा। इस पर्चे में उन्होंने अंग्रेजों के प्रति मुसलमानों की वफादारी के कई प्रमाण प्रस्तुत किए।

बोध प्रश्न 3

1) भूमिपतियों के विद्रोह को अंग्रेजों ने कैसे सम्भाला? पाँच पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....

2) विद्रोह के बाद भारतीय राजाओं के प्रति ब्रिटिश नीति में आए परिवर्तन पर टिप्पणी लिखिए। उत्तर पचास शब्दों में दें।

....
....
....
....
....

3) विद्रोह के बाद मुसलमानों के प्रति ब्रिटिश रवैये का उल्लेख करें। पचास शब्दों में उत्तर दें।

....

....

....

....

....

....

31.9 सारांश

इस इकाई में निम्नलिखित मुद्दों पर विचार किया गया है :

- विद्रोह का मुख्य क्षेत्र नर्मदा के उत्तर में था,
- गंगा के किनारे-किनारे विद्रोह की आग नीचे तक फैली, इस फैलने की पद्धति एक-सी थी,
- सेना और जनता ने मिलकर विद्रोह किया
- जब विद्रोहियों ने कमाने अपने हाथ में ले ली तो सब कुछ अव्यवस्थित नहीं था,
- विद्रोह को दबाने में अंग्रेजों को एक साल लग गया।

1858 के बाद अंग्रेजों को एक प्रकार के स्थायित्व का आभास हुआ। विद्रोह पर विजय प्राप्त कर लेने के बाद उन्होंने आत्मविश्वास के साथ शासन का कार्य आरंभ किया।

31.10 शब्दावली

तैलिंग राज : सिपाहियों को तैलिंग कहने का रिवाज चल गया था, क्योंकि क्लाइव 1756-57 में अपने साथ मद्रास से तेलगुभाषी सिपाही ले आया था।

31.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 31.2
2) भारत के मानचित्र पर जगहों को चिन्हित करें।

बोध प्रश्न 2

1) देखें भाग 31.5
2) देखें भाग 31.6

बोध प्रश्न 3

1) देखें उपभाग 31.7.1
2) देखें उपभाग 31.7.2
3) देखें उपभाग 31.8.2